I.C.S.E

कक्षा : IX

हिन्दी

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.
You will not be allowed to write during the first 15 minutes.
This time is to be spent in reading the question paper.
The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers

*This Paper comprises of two sections; **Section A** and **Section B.***
*Attempt **All** the questions from **Section A.***
*Attempt any **four** questions from **Section B**, answering at least **one** question each from the **two** books you have studied and any **two** other questions.*
The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION – A (40 Marks)

Attempt all questions

Q.1 Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics: [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए:

1. 'दहेज प्रथा - एक अभिशाप' इस विषय पर अपने विचार लिखें:
2. 'परिश्रम ही जीवन का आाधार' इस विषय पर प्रस्ताव लिखें:
3. परीक्षा योग्यता की परख का उत्तम साधन है, परंतु विद्यार्थियों के मन में परीक्षा को लेकर एक भय भी होता है इस आधार पर 'परीक्षा का भय' विषय पर अपने विचार लिखें:
4. एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो : -'एक हाथ से ताली नहीं बजती'

5. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।

Q.2 Write a letter in Hindi in approximately 120 Words on any one of the topics given below: [7]

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) पिछले सप्ताह आपके विद्यालय के छात्रों ने 'प्लास्टिक दानव' शीर्षक से शहर के कई सार्वजनिक स्थलों पर जनता को प्लास्टिक के खतरों को बताने के लिए सभाएँ तथा गोष्ठियाँ कीं। इसकी सूचना देते हुए जनसत्ता समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ii) छोटी बहन नक़ल करते पकड़ी गई है,उसका दुष्परिणाम बताते हुए उसे पत्र लिखें।

Q.3 Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible: [10]

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए : राह पर खड़ा है, सदा से ठूँठ नहीं है। दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने दूर करता था।

पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टँग गया हो। रात में वह काले भूत-सा लगता है, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका-सा 'अभिप्राय' और न मिलेगा। प्रचंड धूप में भी उसका सूखा शरीर उतनी ही गहरी छाया ज़मीन पर डालता जैसे रात की उजियारी चाँदनी में। जब से होश संभाला है, जब से आँख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है। पर पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों और की राहें मिलती हैं और जिनके सहारे जीवन अविरल बहता है। जिसने कभी जल को जीवन की संज्ञा दी, उसने निश्चय जाना होगा की प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति विकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभाग्यों परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है - उसके अंदर का स्नेहरस सूख

जाने से संज्ञा का लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

1. प्रस्तुत अवतरण में जनसंकुल से क्या तात्पर्य है?
2. लेखक ने वृक्ष को हमेशा से कैसे पाया था?
3. सूखे हुए वृक्ष के सामने बरगद और पीपल के पेड़ों के शरमाने का क्या कारण था?
4. कष्ट की अनुभूति किस प्रकार कम हो जाती है?
5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

Q.4 Answer the following according to the instructions given:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए:

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए: [1]
   - रोग
   - आत्मा

2. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: [1]
   - लोप
   - पेड़

3. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए: [1]
   - गहरी
   - सुखद
   - एकांत
   - पृथ्वी

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए: [1]

- उजला
- जटिल

5. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए: [1]

- दिन फिरना
- पत्थर का कलेजा होना

6. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए:

(a) यह तो कोई यान है। (भूतकाल में बदलिए।) [1]

(b) जिसे केवल लक्ष्य दिखाई दे वही सफल होता है। ('सफल' के स्थान पर 'सफलता' का प्रयोग कीजिए) [1]

(c) विवेक छात्र को पढ़ाता है। (द्वारा शब्द का प्रयोग कीजिए) [1]

SECTION - B (40 Marks)

Attempt four questions from this section.

You must answer at least **one** question from each of **two** books you have studied and any **two** other questions.

साहित्य सागर

गद्य

Q.5 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"तुमसे अपराध होगा? यह क्या कह रही हो? मैं रोता हूँ, इसमें मेरी ही भूल है। प्रायश्चित करने का यह ढंग नहीं, यह मैं धीरे-धीरे समझ रहा हूँ, किंतु करूँ क्या? यह मन नहीं मानता।"

पाठ - संदेह

लेखक - जयशंकर प्रसाद

1. उपर्युक्त अवतरण के वक्ता तथा श्रोता का परिचय दें। [2]
2. श्रोता के वक्ता के बारे में क्या विचार हैं? [2]
3. क्या वाकई में वक्ता से कोई अपराध हो गया था? [3]
4. रामनिहाल के रोने का कारण क्या है? [3]

Q.6 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

भेड़ों ने देखा तो वह बोली, “अरे भागो, यह तो भेड़िया है।”

पाठ - भेड़ और भेड़िए

लेखक - हरिशंकर परसाई

1. बूढ़े सियार ने सियारों को क्यों रंगा? [2]
2. पहले भेड़ें क्यों भागने लगीं? [2]
3. तीनों सियारों का परिचय किस प्रकार दिया गया? [3]
4. बूढ़े सियार ने भेड़िये का रूप क्यों बदला और उसे क्या सलाह दी? [3]

Q 7 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

"सेठ जी! यज्ञ खरीदने के लिए हम तैयार हैं, पर आपको अपना महायज्ञ बेचना होगा।"

पाठ - महायज्ञ का पुरस्कार

लेखक - यशपाल

1. उपर्युक्त अवतरण की वक्ता का परिचय दें। [2]
2. श्रोता को वक्ता की किस बात पर आश्चर्य हुआ? [2]
3. सेठ जी धन्ना सेठ की पत्नी की बात सुनकर क्या सोचने लगे? [3]
4. धन्ना सेठ की पत्नी ने सेठ के किस काम को महायज्ञ बताया और क्यों?[3]

साहित्य सागर

पद्य

Q.8 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

इस विशद विश्व-प्रवाह में
किसको नहीं बहना पड़ा
सुख-दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा।
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ
मुझ पर विधाता वाम है
चलना हमारा काम है।

कविता-चलना हमारा काम है
कवि-शिवमंगल सिंह 'सुमन'

1. प्रस्तुत कविता में कवि ने संसार की किस सच्चाई से अवगत कराया है?[2]
2. कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने "बोझ" बाँटने का कौन-सा उपाय बताया है? समझाकर लिखिए। [2]
3. "विधाता वाम" का अर्थ स्पष्ट कीजिए। ऐसा हम कब सोचते हैं और क्यों? स्पष्ट कीजिए। [3]
4. कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [3]

Q.9 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

जब तक मनुज-मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।
उसे भूल वह फँसा परस्पर ही शंका में भय में,
लगा हुआ केवल अपने में और भोग-संचय में।
प्रभु के दिए हुए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर,
भोग सकें जो उन्हें जगत में कहाँ अभी इतने नर?
सब हो सकते तुष्ट, एक-सा सुख पर सकते हैं;
चाहें तो पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं,

कविता - स्वर्ग बना सकते हैं

कवि - रामधारी सिंह दिनकर

1. 'प्रभु के दिए हुए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [2]
2. मानव का विकास कभी संभव होगा? [2]
3. किस प्रकार पल में धरती को स्वर्ग बना सकते है? [3]
4. शब्दार्थ लिखिए - शमित, विकीर्ण, कोलाहल, विघ्न, चैन, पल [3]

Q.10 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,

तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

कविता - भिक्षुक

कवि - सूर्यकांत त्रिपाठी - 'निराला'

1. पहली दो पंक्तियों में कवि ने क्या दृश्य प्रस्तुत किया है? [2]
2. इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में क्या भाव उत्पन्न होते है? [2]
3. क्या भिक्षुकों की मदद करना माननीय धर्म नहीं है? वहाँ अभिमन्यु का उदहारण कवि ने क्यों दिया है? [3]
4. प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [3]

एकांकी संचय

Q.11 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

तब पहले तो वे मेरी बात सुनकर मुस्करा दीं, फिर बोलीं, इसमें मेरा क्या दोष?

एकांकी - संस्कार भावना

लेखक - विष्णु प्रभाकर

1. उपर्युक्त अवतरण की वक्ता का परिचय दें। [2]
2. यहाँ पर किसके कौन-से दोष की बात हो रही है? [2]
3. प्रस्तुत अवतरण में किसके संदर्भ में बात की जा रही है? [3]
4. अविनाश की पत्नी ने क्या वाकई में कोई अपराध किया था? [3]

Q.12 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

अब भी आँखें नहीं खुली? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा न समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति!

एकांकी - बहू की विदा

लेखक - विनोद रस्तोगी

1. वक्ता और श्रोता में क्या संबंध है? वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
2. 'आँखें खुलना' मुहावरे का क्या अर्थ है? इसका प्रयोग किसके लिए और क्यों किया गया है? [2]
3. श्रोता का चरित्र-चित्रण कीजिए। [3]
4. प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक की सार्थकता प्रमाणित कीजिए। [3]

Q.13 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

'तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ़ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।'

एकांकी - दीपदान

लेखक - डॉ. रामकुमार वर्मा

1. वक्ता कौन है? उसका परिचय दीजिए। [2]
2. श्रोता कौन है? उसका वक्ता से क्या संबंध है? [2]
3. वक्ता के उपर्युक्त कथन कहने के पीछे क्या कारण था? [3]

4. वक्ता श्रोता की सुरक्षा के प्रति चिंतित क्यों रहती थी? [3]

नया रास्ता

(सुषमा अग्रवाल)

Q.14 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

तभी नीलिमा ने मीनू को शादी के बारे में पूछ लिया, “मीनू, तू शादी नहीं कर रही है अभी? मैंने सुना है आशा का रिश्ता हो गया है।”

“हाँ नीलिमा ! आशा का रिश्ता हो गया है। लड़का इंजीनियर है। घर भी अच्छा है।”

“पर मीनू, तू शादी के लिए तैयार क्यों नहीं है?” “नीलिमा ने पूछा।

“नीलिमा, अब मैं कुछ निराश सी हो गई हूँ। कौन करेगा मुझसे शादी?”

1. नीलिमा कौन है? वह मीनू को राय क्यों दे रही है? [2]
2. शादी के नाम से मीनू उदास क्यों हो जाती है? [2]
3. नीलिमा उसकी शादी के लिए उत्साहित क्यों है? [3]
4. “कौन करेगा मुझसे शादी?” भाव स्पष्ट कीजिए। [3]

Q.15. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

माँ ने उसे सीने से लगाकर आशीर्वाद दिया, “बेटी, एक देदीप्यमान नक्षत्र बनकर तुम जग को प्रकाशमय कर दो। जीवन की सारी खुशियाँ तुम्हारे पास हों, तुम अपने उद्धेश्य प्राप्ति में सफल हो, यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।”

1. मीनू के मन में किस प्रकार के भाव उभरते रहते थे? [2]
2. मीनू को वकालत करने की आज्ञा किस तरह मिली? [2]
3. किस कल्पना से मीनू सिहर उठती थी? [3]
4. होस्टल पहुँचने के बाद शुरू में मीनू को कैसा लगा? [3]

Q.16. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

वह स्वयं ही दृढ़ता व साहस की मूर्ति थी। उतार चढ़ाव तो हर इंसान की जिंदगी में आते ही रहते हैं। उसने विवाह का सपना ही देखना छोड़ दिया। उसके सामने इतनी लंबी जिंदगी पड़ी थी, जिसका वह एक क्षण भी व्यर्थ नहीं होने देना चाहती थी।

1. लेखिका मीनू को दृढ़ता व साहस की मूर्ति क्यों कह रही है? [2]
2. विवाह के अलावा मीनू के जीवन का लक्ष्य क्या था? [2]
3. मीनू समाज के झूठे आवरण को हटाकर एक सत्य दिखाना चाहती है - स्पष्ट कीजिए। [3]
4. प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। [3]

Solution

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.
You will not be allowed to write during the first 15 minutes.
This time is to be spent in reading the question paper.
The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers

This Paper comprises of two sections; ***Section A*** *and* ***Section B.***
Attempt ***All*** *the questions from* ***Section A.***
Attempt any ***four*** *questions from* ***Section B****, answering at least* ***one*** *question each from the* ***two*** *books you have studied and any* ***two*** *other questions.*
The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION – A (40 Marks)
Attempt all questions

Q.1 Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics: [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए:

1. 'दहेज प्रथा - एक अभिशाप' इस विषय पर अपने विचार लिखें:

   दहेज एक विकट समस्या है। दहेज-प्रथा का उद्भव कब और कहाँ हुआ यह कह पाना असंभव है। विश्व के विभिन्न सभ्यताओं में दहेज लेने और देने के पुख्ता प्रमाण मिलते हैं। इससे यह तो स्पष्ट होता है कि दहेज का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। आज दहेज एक बुरे का रूप धारण करती जा रही है। इस दहेज प्रथा की बीमारी की जड़ एक तो काला धन है, दूसरे मनुष्य की लोभ की दुष्प्रवृत्ति इस कार्य को और प्रेरित करती है।

आज का विवाह दो परिवारों को जोड़ता नही बल्कि सौदेबाजी का माध्यम बन गया है। गरीब कन्याएँ तथा उनके माता पिता दहेज के नाम से भी घबराते है। परिणाम स्वरूप उनके जीवन में अशांति, और उदासी घर कर जाती है। माँ बाप बच्चों का पेट काट कर पैसे बचाने लग जाते है। यहाँ तक कि वे रिश्वत, गबन जैसे अनैतिक कार्य करने से भी नही चुकते। दूसरी ओर दहेज के लालच में बहुओं को परेशान किया जाता है। माँग पूरी न होने पर वधु को बेतहाशा मारना-पीटना, उसका अंग भंग कर देना आज शिक्षित, सभ्य समाज में भी बेरहमी से चलता है।

आज हमारी सरकारों द्वारा लड़कियों के उत्थान व विकास के लिए अनेक योजनाएँ चला रही हैं, जिनमें शिक्षा, रोजगार सहित विवाहोपरांत मदद भी शामिल है। यह सब इसलिए ताकि बेटियों के परिवारों को बेटियाँ बोझ न लगें और लड़कियाँ आत्मनिर्भर हो सकें। दहेज लेना और देना तो कानूनन अपराध है। सरकार ने दहेज प्रथा के विरूद्ध कानून बना दिया है लेकिन कानून बेचारा क्या करे, जब कोई शिकायत करने वाला ही न हो। लड़की का पिता अपनी इज़्ज़त के डर से शिकायत नहीं करता, अन्य लोगों को क्या गरज!

दहेज-प्रथा को मिटाना तभी संभव होगा जब आज की युवा पीढ़ी यह प्रण करें कि वे दहेज से परहेज करेंगे।

2. 'परिश्रम ही जीवन का आाधार' इस विषय पर प्रस्ताव लिखें:

परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हर मानव की कुछ इच्छाएँ व आवश्यकताएँ होती हैं। वह सुख शांति की कामना करता है, दुनिया में नाम की इच्छा रखता है। किन्तु कल्पना से ही सब कार्य सिद्ध

नहीं हो जाते, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है। परिश्रम के बल पर मानव अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। परिश्रम के ही बल पर मनुष्य अपना भाग्य बना सकता है। परिश्रम केवल अकेले मनुष्य के लिये ही नहीं लाभदायक होता है। हम देख सकते हैं, कि जिस देश के लोग परिश्रमी होते हैं, वह पूरा देश तरक्की प्राप्त करता है। अमरीका, चीन, रूस और जापान, इसके उदहारण हैं। छात्रों के जीवन में तो परिश्रम का बहुत अधिक महत्त्व होता है। मानव का शारीरिक व मानसिक विकास भी परिश्रम पर निर्भर करता है। आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक यंत्रों का पुजारी बनता जा रहा है। परिश्रम की ओर से लापरवाही इसमें घर करती जा रही हैं। नैतिक पतन हो रहा है जिससे अशांति फैलती जा रही है। फलस्वरूप समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी परिश्रम आवश्यक है।

कुछ लोग सफ़लता का राज़, परिश्रम की जगह भाग्य को मानते हैं। उनका कहना होता है, कि भाग्य में जो लिखा होता है, उसे टाला नहीं जा सकता। यह बात असत्य है। मनुष्य यदि परिश्रम करे, तो होनी को भी टाल सकता है। किसी ने सत्य ही कहा है, कि परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है। एक आलसी व अकर्मण्य मानव कभी अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकता। भाग्य के सहारे बैठने से कार्य संपन्न नहीं होते। विद्यार्थी वर्ग को भी परीक्षा में सफलता पाने के लिये अटूट श्रम करना पड़ता है। मानव परिश्रम से अपने भाग्य को बना सकता है, कहा जाता है कि ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। जैसे सोए हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नहीं होते उनके लिए परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम ही जीवन की सफलता का रहस्य है।

परिश्रम व सफलता का आपस में बड़ा गहरा संबंध है। हमें तभी सफलता मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं। परिश्रम से मनुष्य सदैव मेहनती बना रहता है, परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है। यह मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्व रखता है। परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को निकम्मा व असफल बना देती है। परिश्रम समस्त कठिनाइयों से निकालने में समर्थ होता है। परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं। परिश्रम के दम पर कई महान विभूतियों ने अंसभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। जिस देश में लोग परिश्रम करते हैं, वह देश उन्नति, विकास और सफलता के शिखर पर खड़ा रहता है।

3. परीक्षा योग्यता की परख का उत्तम साधन है, परंतु विद्यार्थियों के मन में परीक्षा को लेकर एक भय भी होता है इस आधार पर 'परीक्षा का भय' विषय पर अपने विचार लिखें:

परीक्षा का नाम सुनते ही आँखों के सामने परीक्षा-भवन का दृश्य याद आता है। परीक्षा जब पास आने लगती है, तब सभी विद्यार्थी मौज-मस्ती भूलकर पढ़ाई पर ध्यान देते हैं। हर आदमी को जिंदगी में कई बार परीक्षा के कठिन दौरों से गुजरना ही पड़ता है। अब इन कठिन घड़ियों से कोई आदमी चाहे रो-धोकर पार पा ले या हँसी-ख़ुशी गले लगाकर, यह सब सबकी अपनी-अपनी प्रकृति और क्षमता पर निर्भर करता है। परीक्षा योग्यता की परख का उत्तम साधन है। परीक्षा के द्वारा हम विद्यार्थी की बुद्धिमत्ता की जाँच कर सकते हैं।

कई विद्यर्थियों को परीक्षा के बारे में सोचकर ही बेचैनी महसूस होने लगती है। थोड़ा-बहुत दबाव बेहतर प्रदर्शन के लिए मददगार होता है। इससे शरीर में एड्रिनलिन हारमोन स्त्रावित होता है जो व्यक्ति को सचेत बनाए रखता है। लेकिन कभी-कभी परीक्षा का डर इतना व्यापक होता है

कि बच्चों को अधिकतर मानसिक तनाव झेलना पड़ता है। इस तनाव के रहते वह सोच-समझ नहीं पाते हैं। कई बच्चे तो इस तनाव के चलते आत्महत्या तक कर लेते हैं। ऐसे कई उपाय हैं जिनसे परीक्षा का भय दूर किया जा सकता है ताकि विद्यार्थी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। अपना कोर्स समय रहते पढ़ लें और उसका रिविज़न भी कम से कम एक दिन पहले ही पूरा कर लें। मन को शांत रखें और लगन से पढ़ाई करें और बीच में थक जाने पर कुछ आराम कर लें तो दिमाग में ताजगी आ जाती है। खाने में भी अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। मानसिक ताकत के लिये आप लोग रोज दूध, मेवा व फल भी लें। कक्षा में पहुँचकर लंबी-गहरी साँसें लें और छोड़ें। मन में कोई सकारात्मक बात दोहराएँ। सभी प्रश्नों के उत्तर सही से लिखें।

''परीक्षा की कर लो तैयारी,
वरना होगा आँखों में पानी।
किताबों से कर लो बात,
तभी होगा सपना साकार।''

4. एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो : -'एक हाथ से ताली नहीं बजती'

एक दिन एक आदमी पर कुछ लोग मिलकर पत्थर बरसा रहे थे। वह आदमी दर्द से चीख रहा था। क्षमा-याचना कर रहा था। तभी वहाँ से संत महात्मा गुजर रहे थे। यह दृश्य देखते ही उनकी आखों से अश्रु बहने लगे और वे उस आदमी के आगे खड़े होकर उसे बचाने लगे। उन्होंने सबसे यह अमानवीय कृत्य की वजह पूछीं। सबने बताया इसने चोरी की है वह पापी है। आप ही इसका न्याय करें। कहा यहाँ खड़े हर व्यक्ति ने कोई न कोई पाप किया होगा इसका अर्थ यह नहीं की हम अमानवीय तरीके से उन्हें

सज़ा दे। संसार में सबको सुधरने का मौका देना चाहिए। प्यार से समझाना चाहिए मनुष्य के गलत कार्य करने के पीछे की मजबूरी को जानने का प्रयास करना चाहिए और उसे दूर करने में उसकी सहायता करनी चाहिए। इसी में मानव जीवन की सार्थकता है।
तब संत ने उन सब से पूछा कि इसने चोरी क्यों की क्या आपने जानने का प्रयास किया। क्यों ये व्यक्ति यह कृत्य करने के लिए मजबूर हुआ? व्यक्ति से जब बात की गई तो उसने बताया कि वह अकाल में सब कुछ नष्ट हो जाने के कारण वह इस गाँव में रोजी-रोटी तलाश करने आया था। उसने हर दरवाजे पर दस्तक दी परंतु किसी ने भी उसकी सहायता न की उसके बीबी-बच्चे पिछले तीन दिनों से भूखे थे और अब उससे यह नहीं देखा जा रहा था इसलिए मज़बूरी में उसे यह कदम उठाना पड़ा। यह सुनकर गाँव के सभी लोगों की आँखें खुल गई और सबने उस व्यक्ति से माफी माँगते हुए उसकी सहायता का वचन दिया। तभी संत ने कहा याद रखो ताली एक हाथ से नहीं बजती। हर अपराधी जन्म से अपराधी नहीं होता कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक मजबूरियाँ भी इंसान को पाप की ओर धकेल देती है इसलिए न्याय करने से पूर्व सभी को अपने गिरेबान में एक बार झाँक लेना चाहिए।

5. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट संबंध चित्र से होना चाहिए।

उपर्युक्त चित्र में हमें दो हाथ रिक्शा दिखाई दे रही है। पहली रिक्शा में एक महिला और पुरुष बैठे हैं तो दूसरी रिक्शा में कुछ महिलाएँ हैं। इस चित्र को देखकर पता चलता है कि कुछ लोगों को अपना गुजारा करने के लिए कितनी मेहनत का काम करना पड़ता है।

मजदूर हमारे समाज का वह आधार स्तंभ है जिसके सहारे किसी भी देश की आर्थिक उन्नति टिकी होती है। परंतु स्वयं एक मजदूर को मिलता क्या है सबसे न्यूनतम मजदूरी। उसका-जीवन यापन दैनिक मजदूरी पर निर्भर करता है अर्थात् जब तक वह काम करने में सक्षम है तब तक ही उसे मजदूरी मिलेगी। जिस दिन वह काम नहीं करेगा उस दिन उसे मजदूरी भी नहीं मिलेगी। मजदूरों के पास कोई सामाजिक या आर्थिक सुरक्षा नहीं होती। मजदूरों और उनके परिवारों का कोई भविष्य नहीं होता। शिक्षित न होने के कारण कोई भी इनका शोषण कर लेता है और साथ ही ये कई प्रकार के दुर्व्यव्यसन से घिर जाते हैं। कई सालों तक तो हमारे समाज में बंधुआ मजदूरों की परंपरा भी चली आ रही थी। अब यह प्रथा को समाप्त कर दिया गया है। आज मजदूरों के हक़ में कई समाज सेवी संस्थाएँ काम कर रही है, जो उन्हें उनकी मजदूरी का उचित मुवावजा दिलवाती है साथ ही उनके बच्चों और परिवार के लिए कई कल्याणकारी

योजनायें भी चलाती हैं। सरकार भी रोजगार गारंटी कार्यक्रम के तहत मजदूरों को कम-से कम सौ दिनों के रोजगार की व्यवस्था करवा रही है। ऐसे में मजदूरों को भी सचेत और सावधान होने के आवश्यकता है। वे अपने बुरे व्यसनों को त्यागकर मजदूरी कर अपना और अपने परिवार के भविष्य को सुनिश्चित करें। आज भी इस क्षेत्र में बहुत अधिक काम की आवश्यकता है। सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार को केवल योजनायें ही नहीं बल्कि उसके उचित क्रियान्वयन की ओर भी उतना ही ध्यान देने की आवश्यकता है।

Q.2 Write a letter in Hindi in approximately 120 Words on any one of the topics given below: [7]

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) पिछले सप्ताह आपके विद्यालय के छात्रों ने 'प्लास्टिक दानव' शीर्षक से शहर के कई सार्वजनिक स्थलों पर जनता को प्लास्टिक के खतरों को बताने के लिए सभाएँ तथा गोष्ठियाँ कीं। इसकी सूचना देते हुए जनसत्ता समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में

संपादक महोदय

जनसत्ता दैनिक

दिल्ली

दिनाँक - 28 मार्च 2012

मान्यवर,

मैं आपके सम्मानित पत्र का नियमित पाठक हूँ और आपके संपादकीय लेख मुझे बहुत पसंद आते हैं। मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि पिछले

सप्ताह हमारे विद्यालय के छात्रों ने 'प्लास्टिक दानव' शीर्षक से शहर के कई सार्वजनिक स्थलों पर सभाएँ तथा गोष्ठियाँ आयोजित की।

पिछले सप्ताह मेरे विद्यालय के छात्रों ने शहर में जगह-जगह घूमकर 'प्लास्टिक दानव' का मानव के जीवन में सबसे बड़ा खतरा दर्शाते हुए कुछ सभाएँ करके जन-जागरण करने का निश्चय किया। प्रात: 8 बजे ही हमारे विदयालय के चुनिंदा छात्रों का एक दल सभा करने टाउन हाल पहुँचा। टाउन हॉल के केंद्रीय हॉल में हमने एक सभा की। वहाँ शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस सभा को मुख्य वक्ताओं ने संबोधित किया। इस सभा के बाद पीस लाइब्रेरी में जहाँ एक गोष्ठी रखी थी, हम वहाँ पहुँचे और गोष्ठी का आयोजन किया। तत्पश्चात नेहरू पार्क में एक नुक्कड़ नाटक भी किया किया। हमें अपने इस कार्य में शहर के भद्र व विज्ञजनों का भरपूर सहयोग मिला। आपसे निवेदन है कि इस कार्यक्रम से संबंधित समाचार अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करके हमें अनुग्रहीत करें।

सधन्यवाद।

भवदीय

रोहन खुराना

(ii) छोटी बहन नक़ल करते पकड़ी गई है,उसका दुष्परिणाम बताते हुए उसे पत्र लिखें।

सेंट थॉमस छात्रावास

कमरा 234

पुणे

दिनाँक - 25 सितम्बर 2013

प्रिय दीक्षा

स्नेहाशीष।

कल ही पिताजी का पत्र मिला पढ़कर तो जैसे मेरे ऊपर तुषारापात ही हो गया कि तुम परीक्षा में नक़ल करते पकड़ी गई हो। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि हमारी दीक्षा भी ऐसा काम कर सकती है। बहन यह ऐसा दाग है जो मिटाए नहीं मिटता, परन्तु अब जो हो गया सो हो गया पिछली बातों को भूल कर नहीं शुरुआत करो तथा मन भटकाने वाले मित्रों से दूर रहो।

आशा करता हूँ कि तुम इस गलती से सबक लेकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केद्रित करोगी। अपना ख्याल रखना।

तुम्हारा अग्रज

मोहित

Q.3 Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible: [10]

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

राह पर खड़ा है, सदा से ठूँठ नहीं है। दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने दूर करता था।

पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टँग गया हो। रात में वह काले भूत-सा लगता है, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका-सा 'अभिप्राय' और न मिलेगा। प्रचंड धूप में भी उसका सूखा शरीर उतनी ही गहरी छाया ज़मीन पर डालता जैसे रात की उजियारी चाँदनी में। जब से होश संभाला है, जब से आँख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है। पर

पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों और की राहें मिलती हैं और जिनके सहारे जीवन अविरल बहता है। जिसने कभी जल को जीवन की संज्ञा दी, उसने निश्चय जाना होगा की प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति विकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभाग्यों परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है - उसके अंदर का स्नेहरस सूख जाने से संज्ञा का लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

1. प्रस्तुत अवतरण में जनसंकुल से क्या तात्पर्य है?

   उत्तर : प्रस्तुत अवतरण में जनसंकुल से तात्पर्य लोगों की भीड़ से है। एक समय ऐसा भी था जब ये पेड़ हरा-भरा था और इसकी छाया तले लोगों की भीड़ हुआ करती थी।

2. लेखक ने वृक्ष को हमेशा से कैसे पाया था?

   उत्तर : लेखक ने वृक्ष को हमेशा ही ठूँठ, पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टँग गया हो के रूप पाया था।

3. सूखे हुए वृक्ष के सामने बरगद और पीपल के पेड़ों के शरमाने का क्या कारण था?

उत्तर : कभी उसके अधिक हरे-भरे और सघन होना बरगद और पीपल के पेड़ों के शरमाने का कारण था।

4. कष्ट की अनुभूति किस प्रकार कम हो जाती है?

उत्तर : संज्ञा शून्य हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'बदलाव' है।

Q.4 Answer the following according to the instructions given:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए:

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए: [1]
   - रोग - रोगी
   - आत्मा - आत्मीय

2. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: [1]
   - लोप - लुप्त, गायब
   - पेड़ - वृक्ष, पादप, विटप, तरु, शाल, द्रुम

3. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए: [1]
   - गहरी - उथली
   - सुखद - दुखद
   - एकांत - शोर
   - पृथ्वी - आकाश

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए: [1]

- उजला - उजलापन
- जटिल - जटिलता

5. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए: [1]
- दिन फिरना - नई बहू के आते ही रामलाल के घर के दिन फिरने लगे।
- पत्थर का कलेजा होना - सियाराम का तो पत्थर का कलेजा है,जो दो-दो बच्चों की मृत्यु का गम सह गया।

6. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए:

(a) यह तो कोई यान है। (भूतकाल में बदलिए।) [1]

उत्तर : यह तो कोई यान था।

(b) जिसे केवल लक्ष्य दिखाई दे वही सफल होता है। ('सफल' के स्थान पर 'सफलता' का प्रयोग कीजिए) [1]

उत्तर : जिसे केवल लक्ष्य दिखाई देता है, वही सफलता प्राप्त करता है।

(c) विवेक छात्र को पढ़ाता है। (द्वारा शब्द का प्रयोग कीजिए) [1]

उत्तर : विवेक द्वारा छात्र को पढ़ाया गया।

SECTION - B (40 Marks)

Attempt four questions from this section.

You must answer at least **one** question from each of **two** books you have studied and any **two** other questions.

साहित्य सागर

गद्य

Q.5 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"तुमसे अपराध होगा? यह क्या कह रही हो? मैं रोता हूँ, इसमें मेरी ही भूल है। प्रायश्चित करने का यह ढंग नहीं, यह मैं धीरे-धीरे समझ रहा हूँ, किंतु करूँ क्या? यह मन नहीं मानता।"

पाठ - संदेह

लेखक - जयशंकर प्रसाद

1. उपर्युक्त अवतरण के वक्ता तथा श्रोता का परिचय दें। [2]

उत्तर : उपर्युक्त अवतरण की वक्ता श्यामा एक विधवा, समझदार और चरित्रवान महिला है।

श्रोता रामनिहाल है। जो कि श्रोता के यहाँ ही रहता है।

2. श्रोता के वक्ता के बारे में क्या विचार हैं? [2]

उत्तर : श्रोता अर्थात् रामनिहाल के वक्ता श्यामा के बारे में बड़े उच्च विचार है। रामनिहाल श्यामा के स्वभाव से अभिभूत है। वह जिस प्रकार से अपने वैधव्य का जीवन जी रही है। वह रामनिहाल की नज़र में काबिले तारीफ़ है। वह श्यामा की सहृदयता और मानवता के कारण उसे अपना शुभ चिंतक, मित्र और रक्षक समझता है।

3. क्या वाकई में वक्ता से कोई अपराध हो गया था? [3]

उत्तर : नहीं, वक्ता से कोई अपराध नहीं हुआ था।

रामनिहाल अपना सामान बांधें लगातार रोये जा रहा था।

अत: वक्ता यह जानना चाह रही थी कि कहीं उससे तो कोई भूल नहीं हो गई जिसके कारण रामनिहाल इस तरह से रोये जा रहा था।

4. रामनिहाल के रोने का कारण क्या है? [3]

उत्तर : रामनिहाल को लगता है कि उससे कोई बड़ी भूल हो गई है और जिसका उसे प्रायश्चित करना पड़ेगा और इसी भूल के संदर्भ में वह रो रहा है।

Q.6 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

भेड़ों ने देखा तो वह बोली, "अरे भागो, यह तो भेड़िया है।"

पाठ - भेड़ और भेड़िए

लेखक - हरिशंकर परसाई

1. बूढ़े सियार ने सियारों को क्यों रंगा? [2]

उत्तर : बूढ़े सियार ने भेड़ियों का चुनाव-प्रचार तथा भेड़ों को भ्रमित और गुमराह करने के लिए सियारों को रंगा था।

वन-प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना से भेड़िये डर गए थे तब भेड़ियों की रक्षा करने के लिए बूढ़े सियार ने एक योजना बनाई जिसके अंतर्गत उसे भेड़ियों का प्रचार करना था और भेड़ों को यह विश्वास दिलाना था कि भेड़ों के लिए उपयुक्त उम्मीदवार भेड़िये ही है अपनी इस योजना को सफल बनाने के लिए ही उसने सियारों को रंगा था।

2. पहले भेड़ें क्यों भागने लगीं? [2]

उत्तर : बूढ़े सियार ने एक संत के आने की खबर पूरे वन-प्रदेश में फैला रही थी इसलिए उसको देखने के लिए भेड़ें बड़ी संख्या में सभा-

स्थल पर मौजूद थीं। पर जब उन्होंने अपने सामने संत के रूप में भेड़िये को देखा तो वे डर के मारे भागने लगीं।

3. तीनों सियारों का परिचय किस प्रकार दिया गया? [3]

उत्तर : अपनी योजना को सफल बनाने के लिए सियार ने तीन सियारों को क्रमशः पीले, नीले और हरे में रंग दिया और भेड़ों के सामने उनका परिचय इस प्रकार दिया कि पीले रंगवाला सियार विद्वान, विचारक, कवि और लेखक है, नीले रंगवाले सियार को नेता और स्वर्ग का पत्रकार बताया गया और वहीँ हरे रंगवाले सियार को धर्मगुरु का प्रतीक बताया गया।

4. बूढ़े सियार ने भेड़िये का रूप क्यों बदला और उसे क्या सलाह दी? [3]

उत्तर : अपनी योजना को सफल बनाने के लिए बूढ़े सियार ने अपने साथियों को रंगने के बाद भेड़िये के रूप को भी बदला।
भेड़िये का रूप बदलने के बाद बूढ़े सियार ने उसे तीन बातें याद रखने की सलाह दी कि वह अपनी हिंसक आँखों को ऊपर न उठाए, हमेशा जमीन की ओर ही देखें और कुछ न बोलें और सब से जरुरी बात सभा में बहुत-सी भेड़ें आएगी गलती से उनपर हमला न कर बैठना।

Q 7 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

"सेठ जी! यज्ञ खरीदने के लिए हम तैयार हैं, पर आपको अपना महायज्ञ बेचना होगा।"

पाठ - महायज्ञ का पुरस्कार

लेखक - यशपाल

1. उपर्युक्त अवतरण की वक्ता का परिचय दें। [2]

   उत्तर : उपर्युक्त अवतरण की वक्ता कुंदनपुर के धन्ना सेठ की पत्नी हैं। धन्ना सेठ की पत्नी बड़ी विदुषी स्त्री थीं। उनके बारे में यह प्रचलित था कि उन्हें कोई दैवीय शक्ति प्राप्त है जिसके कारण वे तीनों लोकों की बात जान लेती हैं। इसी शक्ति के बल पर वह जान लेती हैं यज्ञ बेचने वाले सेठ अत्यंत उदार, कर्तव्यपरायण और धर्मनिष्ठ हैं।

2. श्रोता को वक्ता की किस बात पर आश्चर्य हुआ? [2]

   उत्तर : श्रोता धन्ना सेठ की पत्नी ने जब वक्ता सेठ जी से अपना महायज्ञ बेचने की बात की तो उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि महायज्ञ की बात तो छोड़िए सेठ ने बरसों से कोई सामान्य यज्ञ भी नहीं किया था।

3. सेठ जी धन्ना सेठ की पत्नी की बात सुनकर क्या सोचने लगे? [3]

   उत्तर : धन्ना सेठ की पत्नी ने जब महायज्ञ की बात की तो सेठजी सोचने लगे कि इन्हें यज्ञ तो खरीदना नहीं है नाहक ही मेरी हँसी उड़ा रही हैं क्योंकि जिस महायज्ञ की वे बात कर रही है वो तो उन्होंने किया ही नहीं है।

4. धन्ना सेठ की पत्नी ने सेठ के किस काम को महायज्ञ बताया और क्यों?[3]

   उत्तर : धन्ना सेठ ही पत्नी के अनुसार स्वयं भूखे रहकर चार रोटियाँ किसी भूखे कुत्ते को खिलाना ही महायज्ञ है। इस तरह यज्ञ कमाने की

इच्छा से धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ, सच्चा यज्ञ नहीं है, निस्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ महायज्ञ है।

साहित्य सागर

पद्‌य

Q.8 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित पद्‌यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

इस विशद विश्व-प्रवाह में
किसको नहीं बहना पड़ा
सुख-दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा।
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ
मुझ पर विधाता वाम है
चलना हमारा काम है।

कविता-चलना हमारा काम है
कवि-शिवमंगल सिंह 'सुमन'

1. प्रस्तुत कविता में कवि ने संसार की किस सच्चाई से अवगत कराया है?[2]

   उत्तर : प्रस्तुत कविता में कवि ने हमें सुख और दुःख की सच्चाई से अवगत कराया है। कवि कहते हैं कि संसार बहुत बड़ा है। यह संसार गतिशील है और सभी मानव इसकी गतिशीलता में प्रवाहित होते रहते हैं। इस संसार के जीवन में सुख और दुख समान गति से आते और जाते रहते हैं। दुनिया में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके जीवन में सुख और दुख न आया हो। सुख और दुख संसार की सच्चाई है।

2. कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने "बोझ" बाँटने का कौन-सा उपाय बताया है? समझाकर लिखिए। [2]

उत्तर : कवि कहते हैं कि जीवन रूपी मार्ग पर चलते हुए अनेक राही मिलते हैं। उनसे अपने सुख-दुःख को बाँटने से मन का बोझ (भार) कम हो जाता है। दुख बाँटने से कम होता है और सुख बाँटने से बढ़ता है।

3. "विधाता वाम" का अर्थ स्पष्ट कीजिए। ऐसा हम कब सोचते हैं और क्यों? स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर : "विधाता वाम" का तात्पर्य है कि ईश्वर हमारे विरुद्ध है। कवि का कहना है सुख-दुख जीवन का अनिवार्य अंग है। संसार के हर व्यक्ति के जीवन में सुख और दुख दोनों विद्यमान हैं लेकिन जब हमारे जीवन में दुख, कष्ट, पीड़ा, अवसाद और अकेलापन बढ़ जाता है तब हमें लगने लगता है कि हमारा भाग्य खराब है और ईश्वर भी हमारे विरुद्ध हो गए हैं।

4. कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [3]

उत्तर : प्रस्तुत कविता केन्द्रीय भाव यह है कि मानव को विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। गति ही जीवन है। जीवन में सफलता-असफलता, सुख-दुःख आते रहते हैं। जीवन में हार-जीत लगी रहती है। अत: सभी परिस्थितियों में आत्मविश्वास बनाए रखते हुए जीवन में गतिशीलता बनाए रखनी चाहिए। जड़ता मानव विकास के लिए खतरनाक है। अत: हमें अपनी बुद्धि की गतिशीलता और रचनात्मकता को कायम रखना चाहिए।

Q.9 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

जब तक मनुज-मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।
उसे भूल वह फँसा परस्पर ही शंका में भय में,
लगा हुआ केवल अपने में और भोग-संचय में।
प्रभु के दिए हुए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर,
भोग सकें जो उन्हें जगत में कहाँ अभी इतने नर?
सब हो सकते तुष्ट, एक-सा सुख पर सकते हैं;
चाहें तो पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं,

कविता - स्वर्ग बना सकते हैं

कवि - रामधारी सिंह दिनकर

1. 'प्रभु के दिए हुए सुख इतने हैं विकीर्ण धरती पर' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [2]

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि ईश्वर ने हमारे लिए धरती पर सुख-साधनों का विशाल भंडार दिया हुआ है। सभी मनुष्य इसका उचित उपयोग करें तो यह साधन कभी भी कम नहीं पड़ सकते।

2. मानव का विकास कभी संभव होगा? [2]

उत्तर : मानव के विकास के पथ पर अनेक प्रकार की मुसीबतें उसकी राह रोके खड़ी रहती है तथा विशाल पर्वत भी राह रोके खड़े रहता है। मनुष्य जब इन सब विपत्तियों को पार कर आगे बढ़ेगा तभी उसका विकास संभव होगा।

3. किस प्रकार पल में धरती को स्वर्ग बना सकते है? [3]

उत्तर : ईश्वर ने हमारे लिए धरती पर सुख-साधनों का विशाल भंडार दिया हुआ है। सभी मनुष्य इसका उचित उपयोग करें तो यह साधन कभी भी कम नहीं पड़ सकते। सभी लोग सुखी और संपन्न होंगे। इस प्रकार पल में धरती को स्वर्ग बना सकते है।

4. शब्दार्थ लिखिए - शमित, विकीर्ण, कोलाहल, विघ्न, चैन, पल [3]

उत्तर : शमित - शांत
विकीर्ण - बिखरे हुए
कोलाहल - शोर
विघ्न - रूकावट
चैन - शांति
पल - क्षण

Q.10 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

कविता - भिक्षुक

कवि - सूर्यकांत त्रिपाठी - 'निराला'

1. पहली दो पंक्तियों में कवि ने क्या दृश्य प्रस्तुत किया है? [2]

उत्तर : पहली दो पंक्तियों में कवि ने भिक्षुक की अपनी क्षुधा मिटाने के लिए जूठी पत्तलें चाटने का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है। भिक्षुक को जब कुछ नहीं मिलता तो वे जूठी पत्तलें चाटने के लिए विवश हो जाते हैं। जूठी पत्तलों में जो कुछ थोड़ा बहुत अन्न बचा था वे उसी को खाकर अपनी भूख शांत करने का प्रयास करते हैं।

2. इस भावुक दृश्य से हमारे हृदय में क्या भाव उत्पन्न होते है? [2]

उत्तर : इस भावुक दृश्य को देखकर हमारे मन में दया और करुणा के भाव उपजते हैं। भूख के क्या मायने होते हैं यह हमें समझ आता है।

3. क्या भिक्षुकों की मदद करना माननीय धर्म नहीं है? वहाँ अभिमन्यु का उदहारण कवि ने क्यों दिया है? [3]

उत्तर : भिक्षुकों की मदद करना मानवीय धर्म है। इस कविता में कवि ने अभिमन्यु का उदहारण भिक्षुक के संघर्ष को दिया है। भिक्षुक को जब कुछ नहीं मिलता तो वे जूठी पत्तलें चाटने के लिए विवश हो जाते हैं। जूठी पत्तलों में जो कुछ थोड़ा बहुत अन्न बचा था वे उसी को खाकर अपनी भूख शांत करने का प्रयास कर रहे होते है कि राह के कुत्ते भी उनसे वह अन्न छीन लेना चाहते हैं। यहाँ पर कवि यही बताने का प्रयास कर रहे हैं कि अपने अधिकारों के लिए आपको लड़ना पड़ता है।

4. प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [3]

उत्तर : प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव एक भिक्षुक और उसके बच्चों की दयनीय अवस्था के चित्रण से पाठकों में ऐसे उपेक्षित लोगों के प्रति सहानुभूति जगाना है। कवि का उद्देश्य है कि समाज में उपेक्षित वर्ग के लिए लोगों के मन में न केवल सहानुभति उपजे वरन् समाज उनकी स्थिति सुधारने का प्रयत्न भी करें।

एकांकी संचय

Q.11 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

तब पहले तो वे मेरी बात सुनकर मुस्करा दीं, फिर बोलीं, इसमें मेरा क्या दोष?

एकांकी - संस्कार भावना

लेखक - विष्णु प्रभाकर

1. उपर्युक्त अवतरण की वक्ता का परिचय दें। [2]

उत्तर : उपर्युक्त अवतरण की वक्ता अविनाश के छोटे भाई अतुल की पत्नी उमा है। उमा परिवार को जोड़ने में विश्वास रखने वाली महिला है। उमा एक भावुक महिला भी है इसलिए वह अपनी सास के बेटे के बिछड़ने के दर्द भलीभांति समझती है।

2. यहाँ पर किसके कौन-से दोष की बात हो रही है? [2]

उत्तर : यहाँ अविनाश की बहू के दोष की बात की जा रही है विजातीय होने के कारण अविनाश की माँ ने उन्हें स्वीकार नहीं किया और इस कारण अविनाश ने अपना घर त्याग दिया और अपनी माँ से

अलग हो गया। अब अविनाश की माँ हर समय अपने बेटे के लिए दुखी रहती है।

3. प्रस्तुत अवतरण में किसके संदर्भ में बात की जा रही है? [3]

उत्तर : प्रस्तुत अवतरण में अविनाश की पत्नी के संदर्भ में बात की जा रही है। अविनाश ने घर वालों के विरुद्ध विवाह किया था। उसकी पत्नी बंगाली थी। विजातीय होने के कारण माँ ने उनके विवाह को स्वीकार नहीं किया इसलिए अविनाश ने अपनी पत्नी के लिए अपना घर ही छोड़ दिया था।

4. अविनाश की पत्नी ने क्या वाकई में कोई अपराध किया था? [3]

उत्तर : नहीं, अविनाश की पत्नी ने कोई अपराध नहीं किया था। अविनाश और उसने अपनी मर्जीनुसार विवाह किया था जिसे घरवालों ने अस्वीकार कर दिया था यही केवल उसका अपराध था। अंतर्जातीय विवाह किसी अपराध की श्रेणी में नहीं आता है हर एक महिला और पुरुष को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार है। अपने अधिकारों का उपयोग करना अपराध नहीं होता है।

Q.12 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

अब भी आँखें नहीं खुली? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा न समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति!

एकांकी - बहू की विदा

लेखक - विनोद रस्तोगी

1. वक्ता और श्रोता में क्या संबंध है? वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

उत्तर : वक्ता का नाम राजेश्वरी है और श्रोता का नाम जीवनलाल है। दोनों के बीच पति-पत्नी का संबंध है। राजेश्वरी छियालीस वर्षीया स्त्री है। उसके पुत्र का नाम रमेश और पुत्री का नाम गौरी है। राजेश्वरी बहू और बेटी दोनों के प्रति समान आदर भाव रखने वाली उदार, धैर्यवान ममता की मूरत है। वह अपनी बेटी गौरी को जितना मानती है उतना ही अपनी बहू कमला को भी।

2. 'आँखें खुलना' मुहावरे का क्या अर्थ है? इसका प्रयोग किसके लिए और क्यों किया गया है? [2]

उत्तर : 'आँखें खुलना' मुहावरे का अर्थ है - भ्रम दूर होना। इसका प्रयोग राजेश्वरी ने अपने पति जीवनलाल के लिए किया है। इसका कारण यह था कि रमेश ने आकर बताया कि उसकी बहन गौरी को उसके ससुराल वालों ने विदा नहीं किया। उनका कहना है कि दहेज पूरा नहीं दिया गया है। इतना सुनकर जीवनलाल क्रोधित हो जाते हैं, तब राजेश्वरी उन्हें उनकी गलती का एहसास कराने के लिए उक्त कथन कहती है।

3. श्रोता का चरित्र-चित्रण कीजिए। [3]

उत्तर : जीवनलाल एक धनी व्यापारी हैं जिनकी उम्र पचास वर्ष है। जीवनलाल संकुचित सोच के ज़िद्दी, अभिमानी, लालची एवं कठोर स्वभाव के व्यक्ति हैं। वे बहू और बेटी में अंतर मानते हैं। वे दहेज-लोभी हैं इसलिए कमला के भाई प्रमोद से बहू की विदाई

के लिए पाँच हज़ार रुपयों की माँग करते हैं। वे अहंकारी हैं। उन्हें अपनी संपत्ति पर भी घमंड है।

4. प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक की सार्थकता प्रमाणित कीजिए। [3]

उत्तर : 'बहू की विदा' एकांकी का शीर्षक सटीक एवं सार्थक है क्योंकि एकांकी की कथावस्तु बहू की विदाई को केंद्र में रखकर ही आगे बढ़ती है। जीवनलाल अपनी बहू कमला की विदाई नहीं करते हैं क्योंकि कमला के ससुराल वालों ने पूरा दहेज नहीं दिया था। जीवनलाल अब कमला के भाई प्रमोद से पाँच हज़ार रुपए की माँग करते हैं जिसे पूरा करने में वह असमर्थ है। दहेज भारतीय समाज की वह कुरीति है जिसने समाज को अमानवीय बना दिया है। वहीं दूसरी ओर जब जीवनलाल की नवविवाहिता पुत्री गौरी भी दहेज की वजह से विदा नहीं हो पाती है तब जीवनलाल की आँखें खुलती हैं और वह बहू को विदा कर देते हैं। अत: शीर्षक संक्षिप्त, रोचक एवं कथा के अनुरूप है।

Q.13 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

'तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ़ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।'

एकांकी - दीपदान

लेखक - डॉ. रामकुमार वर्मा

1. वक्ता कौन है? उसका परिचय दीजिए। [2]

उत्तर : वक्ता पन्ना धाय है। वह स्वर्गीय महाराणा साँगा की स्वामिभक्त सेविका है। वह कर्तव्यनिष्ठ तथा आदर्श भारतीय नारी है। वह हमेशा कुँवर की सुरक्षा का ध्यान रखती है।

2. श्रोता कौन है? उसका वक्ता से क्या संबंध है? [2]

उत्तर : श्रोता स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र है। उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात से पन्ना धाय जोकि महाराज की सेविका थी उसने उसे माँ की तरह पाला।

3. वक्ता के उपर्युक्त कथन कहने के पीछे क्या कारण था? [3]

उत्तर : महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र राज सिंहासन का उत्तराधिकारी था परंतु उनकी आयु मात्र 14 वर्ष होने के कारण महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया। धीरे-धीरे वह राज्य हड़पने की योजना बनाने लगा। इस वजह से कुँवर उदय सिंह की जान को खतरा बढ़ जाने से पन्ना धाय ने उपर्युक्त कथन कहा।

4. वक्ता श्रोता की सुरक्षा के प्रति चिंतित क्यों रहती थी? [3]

उत्तर : वक्ता पन्ना धाय एक देशभक्त राजपूतनी थी तथा अपने राजा के उत्तराधिकारी की रक्षा करना वह परम कर्तव्य समझती थी। महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र राज सिंहासन का उत्तराधिकारी था परंतु उनकी आयु मात्र 14 वर्ष होने के कारण महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया। धीरे-धीरे वह राज्य

हड़पने की योजना बनाने लगा। इसलिए पन्ना धाय कुँवर उदय सिंह की सुरक्षा को लेकर चिंतित रहती थी।

नया रास्ता

(सुषमा अग्रवाल)

Q.14 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

तभी नीलिमा ने मीनू को शादी के बारे में पूछ लिया, "मीनू, तू शादी नहीं कर रही है अभी? मैंने सुना है आशा का रिश्ता हो गया है।"

"हाँ नीलिमा ! आशा का रिश्ता हो गया है। लड़का इंजीनियर है। घर भी अच्छा है।"

"पर मीनू, तू शादी के लिए तैयार क्यों नहीं है?" "नीलिमा ने पूछा।

"नीलिमा, अब मैं कुछ निराश सी हो गई हूँ। कौन करेगा मुझसे शादी?"

1. नीलिमा कौन है? वह मीनू को राय क्यों दे रही है? [2]

   उत्तर : नीलिमा मीनू की हमउम्र और उसकी अभिन्न मित्र है। वह मीनू को विवाह करने की सलाह दे रही है। नीलिमा को जब पता चलता है कि मीनू की छोटी बहन का रिश्ता तय हो गया है और मीनू ने शादी न करने का निर्णय लिया है तो उसे विवाह समय पर करने की राय देती है।

2. शादी के नाम से मीनू उदास क्यों हो जाती है? [2]

उत्तर : मीनू का रिश्ता कई बार साधारण रंग-रूप होने के कारण ठुकराया जा चुका है इसलिए जब उसकी सहेली नीलिमा उसकी शादी के विषय में पूछताछ करती है तो वह उदास हो जाती है।

3. नीलिमा उसकी शादी के लिए उत्साहित क्यों है? [3]

उत्तर : नीलिमा और मीनू हमउम्र सहेलियाँ हैं। नीलिमा की शादी हो चुकी है और वह चाहती है कि उसकी सहेली मीनू का भी विवाह हो जाय इसलिए वह उसकी शादी के लिए उत्साहित है।

4. "कौन करेगा मुझसे शादी?" भाव स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर : यहाँ पर नीलिमा के प्रश्न के उत्तर में मीनू के मुँह से यह उद्गार निकलते हैं। मीनू का रिश्ता बहुत बार ठुकराया जा चुका था उसे अब अपने विवाह की कोई उम्मीद नहीं बची थी ऐसे मैं अपनी सहेली के इस प्रश्न से वह निराश हो जाती है और कहती है कि अब कौन उसके साथ शादी करेगा।

Q.15. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

माँ ने उसे सीने से लगाकर आशीर्वाद दिया, "बेटी, एक देदीप्यमान नक्षत्र बनकर तुम जग को प्रकाशमय कर दो। जीवन की सारी खुशियाँ तुम्हारे पास हों, तुम अपने उद्धेश्य प्राप्ति में सफल हो, यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।"

1. मीनू के मन में किस प्रकार के भाव उभरते रहते थे? [2]

उत्तर : मीनू अपनी जीवन की परिस्थितियों से विवश होकर कई बार वह हीन भावना से ग्रसित हो जाती थी उसे ऐसा आभास होने लगता

था कि उसका जीवन व्यर्थ है जल्द की वह अपनी भावनाओं पर काबू भी पा लेती थी कि उस जैसी होनहार युवती के लिए इस तरह की भावना उचित नहीं है।

2. मीनू को वकालत करने की आज्ञा किस तरह मिली? [2]

उत्तर : बचपन से मीनू की इच्छा वकील बनने की थी परंतु मीनू के माता-पिता उसे हॉस्टल नहीं भेजना चाहते थे। पर मीनू की वकील बनने के प्रति लगन ने उन्हें आज्ञा देने के लिए मजबूर कर दिया।

3. किस कल्पना से मीनू सिहर उठती थी? [3]

उत्तर : मीनू पहली बार आपने माता-पिता से अलग हो रही थी अभी तक हमेशा अपने भाई-बहन के साथ मिलकर पढ़ाई करते हुए बड़ी हुई थी। अचानक उन सबसे दूर हो जाने की कल्पना से ही मीनू सिहर उठती थी।

4. होस्टल पहुँचने के बाद शुरू में मीनू को कैसा लगा? [3]

उत्तर : होस्टल में पहुँचने के बाद कई दिनों तक मीनू का दिल बिल्कुल भी नहीं लगा। उसे कुछ नया और अजीब सा प्रतीत होता रहता था। शुरू में वहाँ उसकी अधिक सहेली भी नहीं बन पाई थी। वह अपना अधिकतर समय पुस्तकों के साथ ही बिताती थी।

Q.16. Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए:

वह स्वयं ही दृढ़ता व साहस की मूर्ति थी। उतार चढ़ाव तो हर इंसान की जिंदगी में आते ही रहते हैं। उसने विवाह का सपना ही देखना छोड़ दिया। उसके सामने इतनी लंबी जिंदगी पड़ी थी, जिसका वह एक क्षण भी व्यर्थ नहीं होने देना चाहती थी।

1. लेखिका मीनू को दृढ़ता व साहस की मूर्ति क्यों कह रही है? [2]

   उत्तर : मीनू के रंग-रूप के कारण वह अनेक बार ठुकराई जा चुकी थी परंतु मेरठ वाले रिश्ते से उसे काफी उम्मीदें बंधी थी लेकिन वहाँ से भी जब उसे ठुकराया गया तो वह एकदम टूट सी जाती है। उसे लगने लगता है कि उसका जीवन व्यर्थ है। पर जल्दी हो अपने आप को संभाल लेती है और विवाह न करने का संकल्प लेकर अपने निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने में लग जाती है।

2. विवाह के अलावा मीनू के जीवन का लक्ष्य क्या था? [2]

   उत्तर : यूँ तो मीनू को बचपन से ही वकील बनने की इच्छा थी परंतु उसके माता-पिता उसे हॉस्टल भेजने के पक्ष में न होने के कारण उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पा रही थी। पर अंत में मीनू की लगन देखकर उन्होंने उसे आज्ञा दे दी इस प्रकार विवाह के अलावा मीनू का लक्ष्य वकील बनना था।

3. मीनू समाज के झूठे आवरण को हटाकर एक सत्य दिखाना चाहती है - स्पष्ट कीजिए। [3]

   उत्तर : यहाँ पर मीनू समाज को यह दिखाना चाहती थी कि केवल विवाह ही किसी लड़की की मंजिल नहीं होती है। लड़की के सामने विवाह के अतिरिक्त भी अन्य कई विकल्प मौजूद होते

है।

4. प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। [3]

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ यह है कि इंसान को परिस्थिति के आगे हार नहीं माननी चाहिए। मीनू ने भी परिस्थिति के आगे हार नहीं मानी और अपना ध्यान लक्ष्य को पूरा करने में केंद्रित कर दिया।